शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2013

संगीत में लय, छंद एवं ताल की भूमिका

गुंजन शर्मा (शोधार्थी)
संगीत विभाग
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

शोध संक्षेप

संगीत में लय, छंद एवं ताल का महत्वपूर्ण स्थान है। लय सुंदरता की चरम विधा है और सुंदरता का सीधा सम्बन्ध हृदय से है। यही लय, साहित्य में छंद का रूप धारण करता है, काव्य एवं संगीत विधान के लिए उपयुक्त शब्दों की लययुक्त व्यवस्था का नाम ही छंद है। इस अखंड काल गति को छंद या पदों में विभाजित करने के जो प्रयोग हुए हैं, उन्हें ही ताल कहा गया है। संगीत में लय, छंद, ताल तीनों ही निहित हैं तथा तीनों ही क्रियाएं आपस में एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं, इन तीनों की संगीत में अपनी अहम भूमिका है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

ध्वनि समस्त वाग् व्यवहार का मूल है। इसी को शब्द, नाद, वाक् आदि भी कहा जाता है। इसके दो भेद माने गये हैं- नादात्मिका और वर्णात्मिका। इनसे क्रमशः संगीत और काव्य का जन्म होता है। स्वर तत्व और काल तत्व, नाद के दो रूप हैं और जब इनमें से काल अनियमित होता है तो सामान्य व्यवहार कहलाता है और जब नियमित गति का रूप लेता है तो संगीत, ताल और छन्द को जन्म देता है। संगीत में वाक् तत्व स्वर के रूप में और काल तत्व लय, ताल के रूप में व्यक्त होता है। काव्य में यही क्रमशः पद और छन्द में व्यक्त होता हैं। भरत ने अत्यंत व्यापक रूप में वाक् तत्व को शब्द और काल तत्व को छन्द कहा है। छन्दहीनो न शब्दोऽस्ति नच्छन्द शब्दवर्जितम्। अर्थात् कोई शब्द यानि ध्वनि छन्द रहित नहीं और न ही कोई छन्द शब्द रहित है क्योंकि ध्वनि काल के बिना व्यक्त नहीं होती काल का ज्ञान ध्वनि के बिना सम्भव नहीं।1 चारों वेद ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, संहिता ग्रन्थ आदि सभी छन्दोमय माने गये हैं। वैदिक और लौकिक संगीत, गंधर्व, मार्गी और देशी सभी में छन्दों का प्रयोग हुआ है। छन्दोबद्ध होकर ही वेद की ऋचाएं सुरक्षित रह सकी हैं। 'छन्द प्रभाकर' पुस्तक में छन्द की परिभाषा इस प्रकार है-

मत वरण यति गति नियम, अन्तहि समता बंद।
जा पद रचना में मिले भानू गनत सोई छन्द।।

छन्द उस वाक्य योजना को कहते हैं जो अक्षरों, मात्राओं और यति आदि के नियम विशेष के अनुसार लिखी गयी हो।2 संगीत के गायन वादन में नित्यप्रति छन्दों का प्रयोग निरर्थक शब्दों के द्वारा भी होता है और यह आनंददायक भी होता है। तराना व तेनक निरर्थक शब्द की रचना है, जो किसी भी छन्द में बंधी हुई हो सकती है। सितार के श्रेष्ठ वादक अपने आघात मात्र से ही कितने ही छंदों का प्रदर्शन करते है और उनकी यह कृति आकर्षक होती है।3 भारतीय संगीत के सम्बन्ध में कहा गया है कि श्रुति इसकी जननी और लय इसके जनक हैं।

संगीत में श्रुति से अभिप्राय स्वर नलिका से न होकर उन सूक्ष्मतम ध्वनि अंतरा से है जिनसे एक सप्तक बनता है। यही श्रुतियाँ संगीत के प्रति जननी का कार्य करती है। सामान्यतः लय शब्द के दो अर्थ हैं- शाब्दिक और पारिभाषिक। लय का स्पष्ट शाब्दिक अर्थ है- संयोग, एकरूपता, मिलन। जब किसी की आवाज़ किसी स्वर नलिका की ध्वनि से मिल जाती है तो हम कहते हैं कि गायक ने लय के साथ श्रुति पर भी अधिकार कर लिया है। जब हमारा मस्तिष्क किसी भी विचार में लीन हो जाता है तो हम कहते हैं कि वह लय की स्थिति में है। इस प्रकार लय शब्द का प्रयोग विभिन्न संदर्भों और अर्थों में किया जाता है। पारिभाषिक अर्थों में लय को तालों एवं काल माप का आधार माना जाता हैं।4 लय संगीत और काव्य में अपनी किंचित संगीतमयता के कारण माधुर्य और सरसता तो भावों के साथ लाती ही है साथ ही एक प्रवाह भक्ति और लोच भी उत्पन्न कर देता है।5 तालस्तलप्रतिस्ठायमिति धातेर्धञिस्मृतः। गीतं, वाद्यं तथा नृतं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।।6 गीत वाद्य एवं नृत्य तीनों की प्रतिष्ठा ताल पर हुई है एवं प्रतिष्ठावाचक धातु रूप तल् से ताल शब्द की व्युत्पत्ति संगीत रत्नाकर में उद्धृत् है। अखण्ड काल गति को छंद या पदों में विभाजित करने के जो प्रयोग हुए, उन्हें ही ताल कहा गया है। संगीत में स्वरों की गति यथार्थतः छंद और ताल ही प्रदान करते हैं। ताल संगीत को एक निश्चित समय के बंधन में बाँधता है। ताल संगीत को अनुशासित कर उसके सुगठित रूप, स्थायित्व एवं चमत्कार से श्रोताओं को विभोर कर देता है। ताल के कारण ही प्राचीन एवं वर्तमान संगीत को स्वरलिपि एवं बोललिपि द्वारा भविष्य के लिए सुरक्षित रखना सम्भव हुआ है।7 करूण श्रंगार, रौद्र, वीभत्स आदि रसों के लिए तालों की विभिन्न गतियों का बड़ा महत्व है। निश्चय ताल गति के फलस्वरूप ही संगीत के क्रमिक आरोह, अवरोह, विराम आदि अत्यंत प्रभावोत्पादक हो जाते है। विश्व विधाता द्वारा सर्जित समस्त प्रकृति में समय क्रम की जो निश्चित गति है, वही संगीत में ताल बनकर उसे उपयोगी रसपूर्ण और स्थायित्व स्वरूप प्रदान करती है। तीनों को पृथक रूप में देखें तो पता चलता है कि ये तीनों पृथक नहीं वरन् एक दूसरे के पूरक हैं।

छंद-लय, लय-ताल, छंद-ताल ये तीनों ही आपस में एक दूसरे से गुंथे हुए हैं और जिनकी आपसी उपस्थिति संगीत में अहम् स्थान रखती है। इसका आपसी सम्बन्ध वर्णन इस प्रकार है- छंद का मूल लक्षण लयबद्धता है। लय के बिना संगीत की सत्ता असम्भव है ही, छन्द भी निष्प्राण है। यही लय जब निष्चित स्वरूप में व्यक्त होती है तो छन्द की उत्पत्ति होती है। भले ही सार्थक शब्द हो या न हो तथा जो स्थान छन्द और लय का है वही स्थान संगीत में ताल का है। छन्द द्वारा काव्य का तथा ताल द्वारा गेय का मान होता है। छंद भाषा को गति प्रदान करता है और स्वरों को गति प्रदान करने वाला तत्व ताल है और छंद के नियत अक्षर, नियत स्थान पर विराम बल, अबल के साथ उच्चारण, उसकी अन्तरनिहित लय को प्रकट करता है। छन्द और ताल दोनों काव्य और संगीत में मापन का कार्य तो करते ही हैं साथ ही वे काव्य और संगीत में लालित्य भी उत्पन्न करते हैं। यह कार्य इनमें अन्तरनिहित लय के द्वारा होता है।8 छन्द-लय एक दूसरे के पूरक हैं। भारतीय छन्द

योजना ही अपने मूल में लयबद्ध है। छन्दों के नियम इस प्रकार हैं कि वे स्वतः लय में उतरते आते हैं। संगीत का आधार भी लय है और लय के सहयोग से ताल में विभाजित करने के बाद ही गायक अथवा वादक के पदों या गतों को स्वरों में बाँधकर गाया जाता हैं। लय, ताल ही भारतीय संगीत का प्राण है। लय की समानता के कारण ही छन्दों में बँधी हुई कविता में जो माधुर्य तथा ओजमयी अनुभूति होती है वही रसानुभूति संगीत की ताल में भी प्रस्फुटित होती है।9

संगीत में पद, स्वर, ताल, गति सभी के एकरूप को छन्द कहते हैं, जो पाद्य कहलाते हैं। पदों के छन्द और गति ताल में सहज अनुकूलता होती है। पदों में यदि स्वर योजना न की जाए तथा सही तरीके से न पढ़ा जाए तो उनमें ताल स्पष्ट दिखाई देता है, यही ताल, छन्द और लय का आपसी सामन्जस्य है। सहज श्रोता संगीत से अपरिचित होने पर पद के गीत के साथ-साथ ताल देने लगते हैं। यही गति लय की स्वाभाविकता का परिणाम है। शोक या निर्बलता में गति मंद हो जाती है। क्रोधावस्था में गति द्रुत हो जाती है। यही स्वर राग, भाषा, लय, ताल, छन्द का समुचित रूप है।10

अतः निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि छंद भाषा के लिए और ताल संगीत के लिए है और इस ताल द्वारा ही संगीत सुशोभित होता है। दोंनो का ही आधार लय है, लय बुनियादी तौर से भाषा से संबद्ध है, क्योंकि भाषा की भी अपनी एक लय होती है। अतः उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि संगीत में लय, छंद, ताल तीनों ही निहित हैं तथा तीनों ही क्रियांए आपस में एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

संदर्भ

1 संगीत संचयन, सुभद्रा चैधरी, पृष्ठ 84
2 सौंदर्य, रस एवं संगीत, प्रो. स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 161
3 वही पृष्ठ 163
4 निबंध संगीत, डा. लक्ष्मीनारायण गर्ग, पृष्ठ 179
5 मध्यकालीन धर्मों में शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन, जतिन्द्र सिंह खन्ना, पृष्ठ
6 संगीत रत्नाकर, तालाध्याय, पृष्ठ 3
7 निबंध संगीत, डा लक्ष्मीनारायण गर्ग, पृष्ठ 103
8 सौंदर्य, रस एवं संगीत, प्रो. स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 169
9 मध्यकालीन धर्मों में शास्त्रीय संगीत का तुलनात्मक अध्ययन, जतिंद्र सिंह खन्ना, पृष्ठ 79
10-सौंदर्य, रस एवं संगीत, प्रो. स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 171